nbt.india
एक सूत्रे सकलम्

साक्षर भारत

मूल्य : एक प्रति ` 0.50
वार्षिक ` 5.00

नेशनल बुक ट्रस्ट साक्षरता संवाद

साक्षरताकर्मियों के लिए

सितंबर 2014 वर्ष 19, अंक 9

साक्षरता दर को अग्रणी समाजों के समकक्ष लाना होगा – प्रणब मुखर्जी

अंतरराष्ट्रीय साक्षरता दिवस के उपलक्ष्य में 8 सितंबर, 2014 को नई दिल्ली में आयोजित एक कार्यक्रम में भारत के राष्ट्रपति प्रणब मुखर्जी ने देश से निरक्षरता को पूरी तरह समाप्त करने के प्रयासों को तेज करने पर जोर देते हुए कहा कि अनुसूचित जाति-जनजाति, अल्पसंख्यकों और वंचित वर्गों में साक्षरता की दर में सुधार लाने पर ध्यान दिया जाना चाहिए। उन्होंने कहा कि हमारा लक्ष्य साक्षरता दर को विश्व के अग्रणी समाजों के बराबर लाने का होना चाहिए।

उन्होंने कहा कि महात्मा गाँधी ने निरक्षरता को 'पाप और शर्म' की बात बताया था और इस स्थिति को समाप्त किया ही जाना चाहिए। निरक्षरता समाप्त करने की मुहिम में उन्होंने स्वयंसेवी एजेंसियों, नागरिक संगठनों, कार्पोरेट और निजी क्षेत्रों की सक्रिय भागीदारी का आह्वान किया।

श्री प्रणब मुखर्जी ने समारोह में कहा, ''आज आजादी के 67 वर्ष से अधिक समय के बाद भी हम कहाँ हैं? साक्षरता दर 1951 में 18 प्रतिशत थी जो उससे चार गुना बढ़कर 2011 में 74 प्रतिशत हो गई है। इसके बावजूद हमारी साक्षरता दर विश्व की 84 प्रतिशत की औसत दर से कम है।'' उन्होंने कहा, ''हमारा लक्ष्य साक्षरता दर को विश्व की औसत दर के बराबर लाना ही नहीं बल्कि विश्व के अग्रणी समाजों के समकक्ष लाने का होना चाहिए।''

उन्होंने कहा, ''मैं एक ओर राज्य सरकारों, पंचायत राज संस्थानों और दूसरी ओर उभरते भारत के सभी हितधारकों– कार्पोरेट और निजी क्षेत्र, स्वयंसेवी एजेंसियों, सामाजिक संगठनों से अपील करता हूँ कि वे एकजुट होकर इस लक्ष्य को पाने में और अधिक उत्साह से काम करें।''

साभार : 'प्रभात खबर' से

साक्षरता एवं सतत विकास

सन् 1967 में यूनेस्को द्वारा यह घोषणा की गई कि प्रत्येक वर्ष 8 सितंबर को अंतरराष्ट्रीय साक्षरता दिवस का आयोजन किया जाएगा। सन् 1968 में पहली बार इसका आयोजन किया गया। इसका उद्देश्य जन समुदायों को समाज में साक्षरता के महत्व को उजागर करना है। प्रतिवर्ष अंतरराष्ट्रीय साक्षरता दिवस के अवसर पर यूनेस्को विश्व स्तर पर साक्षरता एवं प्रौढ़-साक्षरता की स्थिति से अंतरराष्ट्रीय समुदाय को रूबरू कराता है। इस दिन विश्व-भर में विभिन्न कार्यक्रम आयोजित किए जाते हैं।

प्रतिवर्ष अंतरराष्ट्रीय साक्षरता दिवस को एक विशिष्ट थीम दिया जाता है। वर्ष 2007-08 का थीम था–'साक्षरता एवं स्वास्थ्य'। वहीं वर्ष 2009-10 में 'साक्षरता एवं सशक्तीकरण' विषय पर बल दिया गया तथा वर्ष 2011-12 में केंद्र बिंदु 'साक्षरता एवं शांति' था। इसी शृंखला को आगे बढ़ाते हुए इस वर्ष अंतरराष्ट्रीय साक्षरता दिवस-2014 का थीम 'साक्षरता एवं सतत विकास' है।

साक्षरता उन प्रमुख तत्वों में से एक है, जिसकी जरूरत सतत विकास को बढ़ावा देने के लिए आवश्यक है। चूँकि साक्षरता व्यक्ति को सशक्त बनाती है अतः व्यक्ति अपनी आर्थिक क्षमता में बढ़ोतरी कर सामाजिक विकास व पर्यावरण संबंधी उचित निर्णय लेने में सक्षम होता है। साक्षरता जीवनपर्यंत सीखने और समझने पर आधारित कौशल है और यह सतत, समृद्ध और शांतिपूर्ण समाज के निर्माण में अहम भूमिका निभाती है। साक्षरता और कौशल व्यक्ति के जीवन को उन्नत स्तर की ओर ले जाता है। इससे अपने उत्तरदायित्वों को समझने, किसी विषय पर गंभीर चिंतन करने, सत्ता में भागीदारी निभाने, पारिस्थितिकी, जैव-विविधता के संरक्षण तथा आपदाओं से उपजे जोखिम को कम करने आदि के बारे में समझ पैदा होती है। साक्षरता व्यक्तिगत सशक्तीकरण का एक माध्यम है और सामाजिक व मानव विकास का मापक है। साक्षरता गरीबी निवारण, बाल मृत्यु दर कम करने, आबादी में बढ़ोतरी को रोकने, महिलाओं को समान अधिकार दिए जाने तथा शांति व लोकतंत्र के लिए आवश्यक है।

राज्य संसाधन केंद्र, भोपाल को साक्षर भारत सम्मान

माननीय राष्ट्रपति श्री प्रणब मुखर्जी द्वारा प्रौढ़ शिक्षा के क्षेत्र में उत्कृष्ट योगदान के लिए राज्य संसाधन केंद्र, भोपाल, मध्य प्रदेश को साक्षरता के सर्वोच्च सम्मान साक्षर भारत राष्ट्रीय साक्षरता पुरस्कार 2014 से सम्मानित किया गया। राष्ट्रपति ने यह राष्ट्रीय साक्षरता पुरस्कार केंद्र के प्रभारी निदेशक संजय सिंह राठौर को 8 सितंबर, 2014 को अंतरराष्ट्रीय साक्षरता दिवस के अवसर पर राष्ट्रीय साक्षरता मिशन प्राधिकरण, मानव संसाधन विकास मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा विज्ञान भवन, नई दिल्ली में आयोजित राष्ट्रीय समारोह में प्रदान किया।

इस राष्ट्रीय समारोह की अध्यक्षता माननीया श्रीमती स्मृति जुबिन ईरानी, केंद्रीय मंत्री, मानव संसाधन विकास मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा की गई।

विदित हो कि देश-भर के 32 राज्य संसाधन केंद्रों में से राज्य संसाधन केंद्र भोपाल को यह गौरव हासिल हुआ है। इस केंद्र की स्थापना 1995 में की गई थी।

पाठक मंच बुलेटिन

बच्चों की द्विभाषी पत्रिका

वार्षिक शुल्क : ` 100.00

संपादक, राष्ट्रीय बाल साहित्य केंद्र

राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत

(नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया)

नेहरू भवन, 5 इंस्टीट्यूशनल एरिया
फेज-II, वसंत कुंज, नई दिल्ली-110070

माननीया मानव संसाधन विकास मंत्री का संदेश

8 सितंबर, 2014 को अंतरराष्ट्रीय साक्षरता दिवस के अवसर पर मानव संसाधन विकास मंत्री, श्रीमती स्मृति जुबिन ईरानी की ओर से संदेश

''अंतरराष्ट्रीय साक्षरता दिवस प्रतिवर्ष 8 सितंबर को विश्व-भर में मनाया जाता है। यह अवसर हमारे देश से निरक्षरता उन्मूलन के हमारे संकल्प को उजागर करता है। विकास प्रक्रिया में साक्षरता की सशक्त भूमिका एवं महत्व को विश्व-भर में पहचाना गया है। साक्षरता हमारे समक्ष अवसरों के नए क्षितिज खोलती है तथा उन सभी स्त्री-पुरुषों के जीवन-स्तर को बेहतर बनाती है, जिनका जीवन आधारभूत पठन एवं लेखन कौशल की पहुँच से दूर है। साक्षरता गरीबी उन्मूलन तथा सामाजिक परिवर्तन की प्रक्रियाओं में महत्वपूर्ण योगदान देती है। भारत में आज भी लाखों लोग निरक्षर हैं, जो हमारे लिए चिंता का विषय है।

''अंतरराष्ट्रीय साक्षरता दिवस ऐसे लोगों को सलाम करने का अवसर प्रदान करता है जो सुविधाओं से वंचित लोगों की शिक्षा तथा उत्थान के कार्य में समर्पित हैं। इस अवसर पर, मैं भी सभी से अनुरोध करती हूँ कि देश में शत-प्रतिशत साक्षरता लाने हेतु अधिक सक्रिय व प्रभावपूर्ण योगदान दें।''

राज्य संसाधन केंद्रों की सूची (गतांक से आगे)

त्रिपुरा
निदेशक आई/सी
राज्य संसाधन केंद्र
मालेरमठ,
निकट नजरूल छात्रावास
अगरतला-799001
ई-मेल : src_tripura@yahoo.com

प. बंगाल
निदेशक
क्षेत्रीय संसाधन केंद्र
50 बेलीघाट मेन रोड
कोलकाता-700010
प. बंगाल
ई-मेल : srcwb@yahoo.co.in

जन शिक्षण संस्थानों की सूची

अभी तक स्थापित किये गए जन शिक्षण संस्थान (जेएसएस) की क्षेत्रवार सूची निम्नलिखित है :

क्र.सं.	राज्य/केंद्र शासित प्रदेश	जेएसएस की संख्या
1.	आंध्र प्रदेश	12
2.	अरुणाचल प्रदेश	1
3.	असम	3
4.	बिहार	9
5.	छत्तीसगढ़	3
6.	दिल्ली	3
7.	गोवा	1
8.	गुजरात	8
9.	हरियाणा	6
10.	जम्मू-कश्मीर	2
11.	झारखंड	5
12.	कर्नाटक	10
13.	केरल	11
14.	मध्य प्रदेश	27
15.	महाराष्ट्र	18
16.	मणिपुर	3
17.	मिजोरम	1
18.	नगालैंड	1
19.	ओड़िशा	15
20.	पंजाब	2
21.	राजस्थान	6
22.	तमिलनाडु	10
23.	त्रिपुरा	1
24.	उत्तराखंड	6
25.	उत्तर प्रदेश	47
26.	पश्चिम बंगाल	9
27.	चंडीगढ़	1
	कुल	**221**

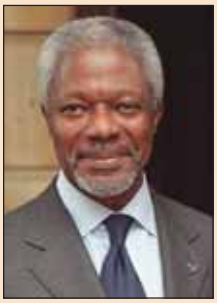

"साक्षरता परिवर्तन का महत्वपूर्ण माध्यम तथा आर्थिक विकास, सामाजिक विकास व पर्यावरण सुरक्षा जैसे तीन प्रमुख स्तंभों के सशक्तीकरण का एक व्यावहारिक उपकरण है।"

कोफी अन्नान
संयुक्त राष्ट्र के पूर्व महासचिव

प्रेरक कथा

रुकैया सखावत हुसैन और लेडीलैंड का उनका सपना

रुकैया सखावत हुसैन एक धनी परिवार में पैदा हुई थीं, जिसके पास बहुत जमीन थी। यद्यपि उन्हें उर्दू पढ़ना और लिखना आता था, परंतु उन्हें बांग्ला और अँग्रेजी सीखने से रोका गया। उस समय अँग्रेजी को ऐसी भाषा के रूप में देखा जाता था, जो लड़कियों के सामने नए विचार रखती थी। जिन्हें लोग लड़कियों के लिए ठीक नहीं मानते थे। इसलिए अँग्रेजी अधिकतर लड़कों को ही पढ़ाई जाती थी। रुकैया ने अपने बड़े भाई और बहन के सहयोग से बांग्ला और अँग्रेजी पढ़ना और लिखना सीखा। आगे जाकर वे एक लेखिका बनीं। 1905 में जब वे केवल पच्चीस वर्ष की थीं, अँग्रेजी भाषा के कौशल का अभ्यास करने के लिए उन्होंने एक उल्लेखनीय कहानी लिखी, जिसका शीर्षक था *सुल्ताना का स्वप्न।* कहानी में सुल्ताना नामक एक स्त्री की कल्पना की गई थी, जो लेडीलैंड नाम की एक जगह पहुँचती है। लेडीलैंड ऐसा स्थान था जहाँ पर स्त्रियों को पढ़ने, काम करने और आविष्कार करने की स्वतंत्रता थी। इस कहानी में महिलाएँ बादलों से होने वाली वर्षा को रोकने के उपाय खोजती हैं और हवाई कारें चलाती हैं। लेडीलैंड में पुरुषों की आक्रामक बंदूकें और युद्ध के अन्य अस्त्र-शस्त्र, स्त्रियों की बौद्धिक शक्ति से हरा दिए जाते हैं और पुरुष एक अलग-थलग स्थान में भेज दिए जाते हैं। सुल्ताना, लेडीलैंड में अपनी बहन साराह के साथ यात्रा पर जाती है, तभी उसकी आँख खुल जाती है और उसे पता चलता है कि वह तो केवल स्वप्न देख रही थी।

जैसा कि आपने देखा रुकैया सखावत हुसैन उस समय स्त्रियों के हवाई जहाज और कारें चलाने का स्वप्न देख रही थीं, जब लड़कियों को स्कूल तक जाने की अनुमति नहीं थी। इस तरह से शिक्षा ने रुकैया का जीवन बदल दिया। रुकैया केवल स्वयं शिक्षित होकर संतुष्ट नहीं हुईं। उनकी शिक्षा ने उन्हें स्वप्न देखने और लिखने की ही शक्ति नहीं दी, वरन उससे भी अधिक करने की शक्ति दी। 1910 में उन्होंने कोलकाता में लड़कियों के लिए एक स्कूल खोला, जो आज भी कार्य कर रहा है।

राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत से प्रकाशित 'नवसाक्षर साहित्यमाला' के अंतर्गत कुछ पुस्तकें : एक परिचय

जंगल

चित्रा मुद्गल पृ. 20 ` 13.00

विमला जोशी कॉलेज में पढ़ाती हैं। उनकी सहेली कमला भी पढ़ाती है। कमला ने घर में खरगोश पाल रखे थे। उनमें से एक सोनू खरगोश की अचानक मौत हो गई। घर के सभी सदस्यों को इन खरगोशों के प्रति गहरा लगाव था, खासकर कमला के पोते पीयूष को। घर में सबकी रोनी सूरत बनी हुई थी। घर के लोग सोनू की अंतिम क्रिया हेतु उसे उठाकर बाहर ले गए। इधर, पीयूष अपनी दादी से तरह-तरह के प्रश्न पूछता है—सोनू मर क्यों गया? उसे किस बात का दुख था? आदि। दरअसल, पीयूष की ही जिद पर खरगोश के दो बच्चे खरीदकर लाये गए थे। सोनू के मरने की वजह पता नहीं चली। इधर, पीयूष के सवाल जारी हैं—दादी, मोनू मेरे साथ खेलता क्यों नहीं? दादी जवाब देती है कि उसका साथी सोनू उससे बिछड़ गया है, इसलिए। दादी आगे कहती है कि जंगल उनका घर है। जंगल में उनका परिवार है। परिवार से अलग होने के दुख से सोनू मर गया है। पीयूष निर्णय लेता है कि वह मोनू को जंगल में ले जाकर छोड़ देगा। अब पीयूष तोता भी नहीं खरीदेगा, ऐसा उसने विचार कर लिया। कमला पीयूष को छाती से सटाकर उसे प्यार करने लगी। पशु-पक्षियों के प्रति संवेदना जगाती पुस्तक।

ISBN 978-81-237-5867-1

भूल

जैबुन्निसा 'हया' पृ. 16 ` 14.00

सुनंदा और कांता प्रसाद की दो संतानें हैं—एक पुत्र, नवीन और एक पुत्री, रेवती। कांता प्रसाद की दूकान है जिससे परिवार चलता है। कांता प्रसाद को अपनी पुत्री से जितना लगाव है उतना पुत्र से नहीं। इधर, सुनंदा अपने पुत्रमोह में अंधी बनी हुई है। उसकी ही चिंता में मगन रहती है। पुत्री रेवती पाँव से अक्षम है, लेकिन ऊपरवाले ने उसके हाथों में गजब का हुनर भर रखा है—वह मिट्टी से शानदार खिलौने बना लेती है। लेकिन माँ की नजर में उसका यह गुण किसी काम का नहीं। इधर, पिता रेवती का पूरा ध्यान रखते। एक दिन गुस्से में पिता ने नवीन की पिटाई कर दी और उसे 'बहन का सहारा' बनने की नसीहत दी। रेवती ने यह सुन मन में ठान लिया कि वह आत्मनिर्भर बनेगी। उसने पिता की सहमति से विमला दीदी के हस्तशिल्प केंद्र में अपना नाम लिखवाया और अच्छे-अच्छे खिलौने बनाने लगी। गाँव के मेले में उसके बनाए खिलौने खूब बिके। उसे पैसे भी मिले। इधर, बेटा परीक्षा में फेल हो गया। माँ को अपनी भूल का अहसास हुआ। बेटे को लाड़-प्यार में उन्होंने ही बिगाड़ा था। सुनंदा रोते हुए कांता प्रसाद से बोली, "काश, मेरी दो बेटियाँ ही होतीं!"

ISBN 978-81-237-5526-7

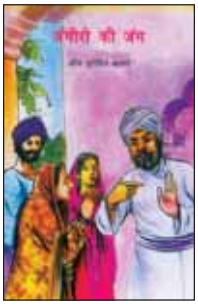

जंगीरो की जंग

ओम पुरोहित कागद पृ. 24 ` 13.00

बचपन का नाम था उसका जंगीर। शादी हुई तो जंगीर कौर बन गई। पति मजदूर था। पति के दोनों भाई किसानी करते। माँ नसीब कौर साथ ही रहती, साथ ही पिता भी। किसानी करने वाले दोनों भाई धूर्त थे। पिता की मौत पर लंबी-चौड़ी जमीन पर उन्होंने कब्जा कर लिया। माँ, छोटे भाई अमर व उसकी पत्नी को घर से निकाल दिया। विचार करके तीनों गुरुद्वारे आ गए। जंगीर थोड़ी-बहुत पढ़ी-लिखी थी, समझदार भी। सास ने घर से निकलते वक्त उसे जंगीरो कहकर पुकारा था। इस नाम में मिठास थी। गुरुद्वारे के भाईजी ने इनकी आपबीती सुनी, रहने को जगह दी। बाद में जमीन भी मुहैया कराई ताकि वे खेती-बाड़ी कर सकें, कुछ कमाई हो। कमाई हुई भी। अब उनका अपना घर भी हो गया। जंगीरो माँ भी बन गई। एक दिन इन्हें पता चला, दोनों भाई लड़कर जेल पहुँचे हुए हैं। जंगीरो की पहल पर दोनों भाइयों की जमानत हुई। दोनों ने माफी माँगी। छोटे भाई अमर ने दोनों बड़े भाइयों से कहा कि जंगीरो ने ही उन्हें छुड़वाया है। बड़े जेठ गुरमीत ने जंगीरो को कहा—तुमने जंग जीत ली जंगीरो!

ISBN 978-81-237-5528-1

रेशमा

सरदार सिंग बैनाडे; अनु. : लछमन हर्दवाणी पृ. 24 ` 7.00

नामा और राधा गाँव में रहते हैं। नामा दूध का कारोबार करके जीवनयापन करता है। एक बेटी है सीमा और गाय का नाम रेशमा रखा है। जितना ध्यान बेटी पर देता है उतना ही गाय पर। गाय गाभिन है। ब्याने वाली है। दूध का कारोबार अच्छा चल रहा है। एक दिन गाँव में एक जाना-पहचाना चेहरा उसे दिखा। पहचान गया। बचपन का साथी सखा था। सखा मुंबई में रहता था, पर अब परिवार समेत गाँव लौट आया था। नामा ने उसकी रामकहानी सुनी, उसे ढाढ़स बँधाया। कहा—तुम भी यहाँ मन का कोई धंधा करो। चिंता मत करो। वह उसे ले गया बैंक अधिकारी के पास। परिचय कराया। अधिकारी ने उसका लोन स्वीकृत किया। दूध का ही धंधा उसे भी पसंद आया था। गायें खरीदीं। कारोबार

चल निकला। नामा ने गाय पालन की तमाम बातें उसे बताईं। सखा पत्नी पारू संग गाय की सेवा करने लगा। गाँव के कुछ और नौजवानों को जोड़ा गया और गाँव में ही डेयरी खुल गई। सब खुश थे। नौजवानों की महानगर पलायन करने की योजना अब नहीं रही। वे यहीं गाँव में सुखी थे। ISBN 978-81-237-3210-7

सुजाता की सास

शिव मृदुल पृ. 12 ` 8.00

आम तौर पर भारतीय समाज में लड़की का जन्म होने पर सास खुश नहीं होती। उन्हें तो बस पोते की चाह रहती है, पर इस कहानी में सुजाता की सास कमला अलग मन-मानस की है। बहू सुजाता की जचगी के लिए घर में ही अस्पताल की-सी सुविधा और साज-सज्जा करवाई उन्होंने और वहीं उनकी बहू का प्रसव हुआ। लड़की के जन्म होने पर उन्हें खुशी हुई। उनकी बेटी बसंती ने जब हैरानी व्यक्त की कि लड़की के जन्म पर आप थाली बजवा रही हैं तो उनका जवाब था—तुम्हारे जन्म लेने पर भी मैंने थाली बजवाई थी। बच्ची के जन्म के सप्ताह भर बाद जब घर में जलसा हुआ तो बसंती ने बताशे बाँटे और कमला ने लड्डू। गाँव की महिलाओं की हैरानी देख कमला बोली—अब जमाना बदल गया है। लड़का या लड़की के जन्म से कोई फर्क नहीं पड़ता। लड़की तो पिता और पति दोनों के घर को रौशन करती है। गाँव की महिलाओं ने कहा—शाबास कमला! सास हो तो तुम जैसी। इधर, सुजाता भी आश्वस्त थी कि बेटी को जन्म देकर उसने कोई गुनाह नहीं किया। ISBN 978-81-237-5559-5

मुक्ति के लिए

जगवीर सिंह वर्मा पृ. 12 ` 6.00

प्रथा, परंपरा आदि ऐसी बेड़ियाँ हैं जिनमें हमारा समाज आज भी जकड़ा हुआ है। शास्त्रों में लिखी बातें मानो अकाट्य ही हों। जरा-सी अवहेलना हुई तो न जाने कौन-सा पहाड़ टूट पड़ना है। इस कहानी में सिरदारी के पति की तेरहवीं पर पिंडदान के लिए कुछ ब्राह्मण पंडित सिरदारी के घर आए हैं। पिंडदान के लिए आवश्यक सामग्री सिरदारी नहीं जुटा पा रही है। रुपये-पैसों का अभाव है। बच्चे भूख से बिलख रहे हैं। सहयोग तो कहीं से मिल नहीं रहा, पर सुझाव सब तरफ से आ रहे हैं। सुझाव से अधिक उलाहने कि पिंडदान की तैयारियों में इतनी देर क्यों? गरूड़ पुराण की याद दिलाई जा रही है कि आदमी की आत्मा मरने के बाद प्रेत योनि में भटकती रहती है। पिंडदान के बाद ही इसकी सद्गति होती है। गाँववाले नसीहतें दे रहे हैं कि द्वार पर ब्राह्मण खड़े हैं और सिरदारी उनकी अवहेलना कर रही है। सिरदारी एक जगह सहयोग के लिए जाती भी है, किंतु उसे वहाँ से कुश-तिल तक का सहयोग नहीं मिलता। थककर सिरदारी तय करती है कि वह पिंडदान नहीं करेगी, पहले बच्चे के मुँह में दाना जाए इसके लिए उपक्रम करेगी। ISBN 978-81-237-2342-6

बुधिया का सपना

सतीश उपाध्याय पृ. 20 ` 12.00

धरमपुर गाँव के रामरतन अपनी पत्नी बुधिया और बेटी मानकुँवर के साथ रहते थे, किसानी करते थे। बुधिया किसानी में पति का साथ देती। साथ ही, बेटी को आगे पढ़ाने का मन भी बना रखा था। एक दिन रामरतन के बीमार पड़ जाने पर बुधिया खेत में स्वयं ही हल चलाने का निश्चय कर खेत पहुँच गई और हल चलाया। बुधिया ने मना किया कि हल मत चलाओ, गाँव में इसे अपशगुन माना जाता है। बुधिया ने कहा कि स्त्री का हल चलाना पाप नहीं, अपशगुन नहीं, लेकिन बात का बतंगड़ हो गया। खार खाए मुखिया को मौका मिल गया। पंचायत बैठाई गई, दंपती को बुलाया गया। बुधिया से जो-जो पूछा गया उसने सब का 'हाँ' में जवाब दिया और हल चलाने के 'अपराध' को स्वीकार किया। इधर, पंचायत का यह रूप-रंग देख रामरतन को फालिज मार गया था और वह अस्पताल में था। बावजूद इसके, पंचायत ने इस अपराध में बुधिया को दो दिन तक दूसरे के खेत में जुताई करने की सजा सुनाई और इस सजा की जबरदस्ती तामील भी करवाई। बुधिया थाने पहुँच गई, सब बात कही। मुखिया को जेल हुई। 'अपशगुन' के बावजूद गाँव में पानी बरसा। बुधिया का हौसला बुलंद था। ISBN 978-81-237-4759-0

नवसाक्षरों के लिए पुस्तकें

हर विषय की पुस्तकें

अपनी भाषा में रोचक, ज्ञानवर्धक पुस्तकें

सूची-पत्र मँगवाने के लिए आज ही निम्नलिखित पते पर संपर्क करें :

प्रबंधक (विक्रय एवं विपणन)

राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत

(नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया)

नेहरू भवन, 5 इंस्टीट्यूशनल एरिया, फेज-II

वसंत कुंज, नई दिल्ली-110070

ई-मेलः office.nbt@nic.in

वेबसाइट : www.nbtindia.gov.in

काम एक : तरीके तीन

यह मेरा घर है।
इस घर की दो मंजिलें हैं।
मेरा कमरा दूसरी मंजिल पर है।
उस कमरे में एक खिड़की है।
खिड़की बंद कर दो,
अँधेरा हो जाता है।
घुटन हो जाती है।
खिड़की खोल दो,
उजाला हो जाता है।
खुली खिड़की मुझे अच्छी लगती है।

खिड़की से खेत नजर आते हैं।
खिड़की से आसमान नजर आता है
दायीं ओर मकान हैं।
बायीं ओर मकान हैं।
सामने खाली जमीन है।
इस जमीन पर क्या बनेगा?

एक दिन मैं सुबह उठा।
मैंने खिड़की से बाहर देखा।
वहाँ पत्थरों के ढेर लगे थे।
दोपहर तक वहाँ मजदूर आ गए।
कुछ मजदूर नींव खोदने लगे।
कुछ मजदूर ईंटें तोड़ने लगे।
कुछ मजदूर पत्थर तोड़ने लगे।

मैंने सोचा, जाकर पूछूँ यहाँ क्या बनना है?
भवन? या मकान? या कुछ और?
पहले मजदूर के पास रुका।
वह ऐसे बैठा था
जैसे अभी उठ खड़ा होगा।
उसके रूखे बाल बिखरे हुए थे।
उसकी दाढ़ी बढ़ी हुई थी।
उसकी कमीज मैली थी।

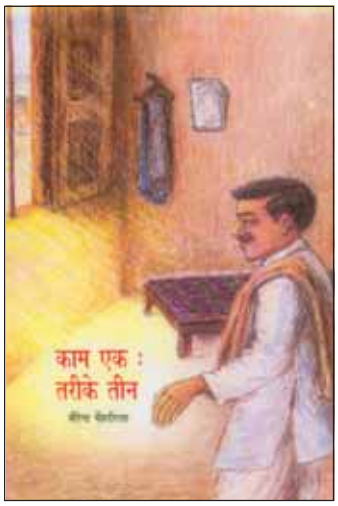

ईंटें ऐसे तोड़ रहा था,
जैसे उन्हें पीट रहा हो।

बड़े गुस्से के साथ
हथौड़ा उठाता और गाली देता हुआ
ईंट फोड़ता।
रोड़ी बनाता।
ईंटों के छोटे-बड़े टुकड़े
इधर-उधर बिखर रहे थे।
इसकी उसे परवाह न थी।

मैंने उससे पूछा,
क्या कर रहे हो?
उसने जलती आँखों से मेरी ओर देखा।
वह बोला :
जिसकी किस्मत में
ईंट-पत्थर हो
वह भला क्या करेगा?
आज ईंट कूट रहा हूँ,
कल पत्थर कूटूँगा।

मैंने पूछा–
इन ईंट-पत्थरों का क्या होगा?
वह बोला–
मेरी बला से,
कुछ भी हो।
मुझे अपनी रोजी चाहिए।
दो वक्त की रोटी मिल जाए
यही बहुत है।

उसकी बात सुनकर
मैंने कदम आगे बढ़ाए।
मैं जानना चाहता था,
यहाँ क्या बनना है?

राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत (नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया) से प्रकाशित पुस्तक 'काम एक : तरीके तीन' (वीरेन्द्र मेंहदीरत्ता) से एक अंश

ऐसा क्यों?

(भाग-3)

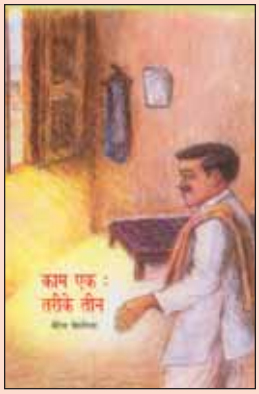

उषा कहती है...

मैं बेटे का सारा काम करती हूँ।
उसे दूध पिलाती हूँ। उसे साफ रखती हूँ।
उसे नहलाती हूँ। कपड़े पहनाती हूँ।
उससे खेलती हूँ। उसे सुलाती हूँ।
वह रोये तो गीत गाती हूँ। बातें करती हूँ।
बेटा साफ हो। खुश हो।

तब, उसके पिता उसे उठाते हैं। उससे खेलते हैं।
पर उसका एक भी काम नहीं करते।
उसे नहलाते नहीं।
उसे सुलाते नहीं।
वह कहते हैं, "वह सब तो तुम्हारा काम है।"
बेटा हम दोनों का है।

तो फिर ऐसा क्यों?
क्या यह ठीक है?

शांता कहती है...

मैं भोर सवेरे उठती हूँ।
घर का सारा काम करती हूँ।
दिन-भर खेत में मजदूरी करती हूँ।
घर का सारा खाना बनाती हूँ।
रात को बहुत देर से सोती हूँ।

सच कहूँ तो मैं बहुत थक जाती हूँ।
मैं उसे खेत में मदद करती हूँ।
पर वह मुझे घर के काम में मदद नहीं करता।
पानी नहीं भरता।
बच्चों की देखभाल नहीं करता।
यह घर हम दोनों का है।

तो फिर ऐसा क्यों?
क्या यह ठीक है?

मीरा कहती है...

मुझे एक के बाद एक दो बेटियाँ हुईं।
सभी मुझे ताने देने लगे।
"तुम्हीं में कोई कमी है।
तुम्हीं में कोई खोट है।"

पर यह बात मुझे नहीं समझ आई।
इसमें मेरी क्या गलती?
बेटी तो हम दोनों की है?
फिर मैं अकेली ही जिम्मेदार क्यों?

ऐसा क्यों?
क्या यह ठीक है?

रमा कहती है...

घर में क्या-क्या करना है,
वह मैं तय नहीं कर सकती।
बच्चों के लिए क्या लाना?
कौन-से कपड़े लाना?
क्या खरीदना?
खेती की कौन-सी फसल बेचनी?
और किसे बेचनी?

यह सब घर के पुरुष देखते हैं।
इतना ही नहीं,
मुझे कब बच्चा चाहिए?
कितने बच्चे चाहिए?
यह भी मैं तय नहीं कर सकती।

ऐसा क्यों?
क्या यह ठीक है?

राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत (नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया) से प्रकाशित पुस्तक 'ऐसा क्यों?' (बालकृष्ण बोकील) से एक अंश

जहर/अन्य विषैली वस्तु खा-पी लेना

कीटनाशक दवा जैसा कोई विषैला पदार्थ खाने से, या त्वचा पर विषैला पदार्थ लगने से या साँस द्वारा विषैली गैस या पदार्थ शरीर के अंदर चले जाने से बेहोशी आ सकती है। उदाहरण के लिए चूहे मारने की दवा, डीडीटी, कीड़े मारने की अन्य दवाएँ, टिंचर आयोडिन आदि खा-पी लेने से, या कपड़े धोने वाले साबुन, रेंड़ी के बीज, सड़ा या अधिक समय का बासी भोजन, मिट्टी का तेल, पेट्रोल आदि खा या पी लेने से बेहोशी आ सकती है।

प्राथमिक उपचार

जैसे ही कोई व्यक्ति विषैला पदार्थ खा या पी ले, उसे नीचे लिखी विधियों से उल्टी कराने का प्रयास करें :

- गले में उँगलियाँ डालकर उल्टी करवाएँ। इससे जहर बाहर आ जाता है।
- गरम पानी में नमक की अधिक मात्रा डालकर उसका घोल पिलाएँ, इससे भी उल्टी हो जाती है और उसके साथ विष बाहर निकल जाता है।

R. N.I. No. 65414/96
Postal Regd. No. DL-SW-1/4078/2012-14
Licence to post without prepayment
L. No. U(SW) 22/2012-14
Mailing date 25/26 same month
Date of publication 15/09/2014

- एक बड़ा चम्मच इपिकाक नाम की दवा (सीरप के रूप में) पिलाने के बाद एक गिलास पानी पिला देना चाहिए। यदि व्यक्ति ने तीखी एसिड, गेसोलिन, मिट्टी का तेल या सज्जीदार पानी (लाई) पी या निगल लिया हो तो इसका उपयोग न करें।
- फेंटा हुआ अंडा, दूध अथवा आटा पानी में घोलकर पिला देने से भी उल्टी आ सकती है और विष बाहर आ जाता है।

ध्यान दें : यदि मरीज बेहोश है तो उसे उल्टी नहीं करवानी चाहिए। यदि साँस रुक गई है तो मुँह से नकली श्वसन करवाना चाहिए और तुरंत डॉक्टर के पास ले जाना चाहिए। यदि मरीज ने पेट्रोल या मिट्टी का तेल पी लिया हो तो भी उल्टी न करवाएँ।

रेखा चतुर्वेदी द्वारा लिखित तथा राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत (नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया) से प्रकाशित पुस्तक 'दुर्घटना होने पर क्या करें' से एक अंश

'साक्षरता संवाद' के अंतिम दो पृष्ठ 7 और 8, नवसाक्षरों के लिए हैं। इसे अलग करके अन्य पठन सामग्री के साथ रखा जा सकता है।

संपादक : **उमा बंसल**
कार्यकारी संपादक : **दीपक कुमार गुप्ता**
संपादकीय सहयोग : **अल्पना भसीन**
उत्पादन अधिकारी : **नरेन्द्र कुमार**

साक्षर भारत

राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत
(नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया)
नेहरू भवन, 5 इंस्टीट्यूशनल एरिया, फेज-II
वसंत कुंज, नई दिल्ली-110070
ई-मेलः office.nbt@nic.in
वेबसाइट : www.nbtindia.gov.in

पाठकों से अनुरोध है कि वे **साक्षरता संवाद** के बारे में अपने विचार संपादक को लिखें।

राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत की ओर से सतीश कुमार द्वारा मुद्रित एवं प्रकाशित तथा पुष्पक प्रेस प्रा.लि., 203-204, डी.एस.आई.डी.सी. शेड, फेज-I, ओखला इंडस्ट्रियल एरिया, नई दिल्ली-110020 से मुद्रित और राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत, नेहरू भवन, 5 इंस्टीट्यूशनल एरिया, फेज-II, वसंत कुंज, नई दिल्ली-110070 से प्रकाशित। संपादक : उमा बंसल।

एस.एस. इंटरप्राइजेज, प्रथम तल, जी.जी.-1/36बी, विकासपुरी, नई दिल्ली-110018 से टाइपसेट।

भारत सरकार सेवार्थ

डाक वापसी की दशा में कृपया इस पते पर वापस करें :
नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया, नेहरू भवन, 5 इंस्टीट्यूशनल एरिया, फेज-II, वसंत कुंज, नई दिल्ली-110070